CREATING AN INCLUSIVE SCHOOL

Prep By :-

Mr. D. K. Singh.

DEVENDRA SIR DATE- 25.04.2020

B.Ed 2018-20 UNIT - III

Sub - CREATING AN INCLUSIVE SCHOOL

Q. समावेशी शिक्षा में कौन-कौन सी बाधाएं है? उल्लेख करें-

Ans विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को हाव-भाव की दृष्टि से तिरस्कृत समझा जाता है। यहाँ तक की बालक के माता पिता ऐसे बालकों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। अक्सर यह देखा गया है कि माता पिता यहाँ तक कह देते है कि यह बालक हमारे से किस जन्म का बदला लेने के लिए पैदा हुआ है। यह तो हमारी पूरी उम्र का बोझ है। इन बालकों के लिए अधिकाँश माता पिता ही संवेगात्मक दृष्टि से सकारात्मक न होकर उनकी अपेक्षा करते है। हाव-भाव की दृष्टि से विशेष बालकों को उपेक्षित किया जाता है और इनसे घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। माता पिता ऐसे बालकों को जन्म देने के बाद असंतोष की भावना बनी रहती है। माता पिता समझते है कि यह बालक उम्र भर हमें कष्ट देगा। जिसका सीधा प्रभाव बालक पर नकारात्मक दृष्टि से बालक के मस्तिष्क पर पड़ता है। और बालक हीनता की भावना दिन प्रतिदिन बढ़ने लगती है। जब बालक के मातापिता के आपसी संबंध ठीक नहीं तो ऐसे बालक के जन्म के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करते है और स्वयं आक्रामक एवं शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते है।

जब किसी बालक के किसी अंग में विकार आ जाता है तो वह माता पिता अन्य बच्चों की अपेक्षा उस बालक का तिरस्कार करते है। अन्य बच्चों एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के प्रति भेदभाव किया जाता है। ऐसे विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के रिश्तेदार उनको दया की दृष्टि से अवश्य देखते हैं।

लेकिन इन बालकों को सहयोग देने से परहेज करते है। आम तौर पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को परिवार पर बोझ माना जाता है। अभिभावक यह समझते है कि उन्हे जीवनभर ऐसे बच्चों की परवरिश जीवन भर करनी होगी और अपने पैरों पर खड़े नही हो सकते। इस प्रकार की विचारधारा के चलते उनकी शिक्षा, प्रशिक्षण, आजीविका कमाने योग्य बनाने और उनके पुर्नवास के लिए कोई विशेष काम अभी नही हो पाया है। कालान्तर में उनकी शिक्षा का प्रयास अवश्य किये गये परन्तु विकलांग बालकों को सामान्य बालकों से पूर्ण रूप से भिन्न माना गया।

समावेशी शिक्षा में दूसरी प्रमुख बाधा है- सामाजिक वातावरण जो विशेष आवश्यकता वाले बालकों के लिए अनुकूल न होकर प्रतिकूल होता है। समाज के अधिकांश लोग ऐसे बालकों के प्रति दया और सहानुभूति के भाव तो अवश्य प्रकट करते हैं लेकिन जब इन बालकों के साथ सहयोग करने का सवाल खड़ा होता है तो वे शिष्टाचार ढंग से पीछे हट जाते है। आज भी समाज के लोगों के बीच नकारात्मक भाव है। वे आज भी अपंग बालकों को हीनभावना से देखते है। इन बालकों को अपनी अक्षमता के कारण और समाज की अवहेलना के कारण सामाजिक क्रियाकलापों और गतिविधियों से दूर रहना पड़ता है जिससे उनके समाजीकरण की प्रक्रिया में बाधा आती है।

भारतीय समाज का बन्द समाज अधिकतर गाँवों में निवास करती है। बन्द समाज के लोग अन्धविश्वासी, रूढ़िवादी और संकीर्ण विचार रखते है और वे अपने रिती रिवाज पारम्परिक परिपाटी को त्यागने का कदापि भी प्रयास नही करते। इस समाज के लोग अपने बालकों को समावेशीत स्कूल में भेजने के लिए तैयार नही होते क्योंकि जब वे

classmate
Date
Page

आपने समान्य बालकों को प्राथमिक शिक्षा के पुरा किये बिना स्कूल से हटा लेते हैं तो उनसे यह आशा कैसे रखी जा सकती है। इस बन्द समाज के लोगों की विचारधारा के चलते आज भी हम 6 से 14 वर्ष के बालकों को प्राथमिक शिक्षा को सुनिश्चित नहीं करवा सके। इस समाज के लोग उदार विचारों से ही वंचित नहीं बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी बहुत कमजोर है। इन्हीं कारणों से अव्यय तथा अपरोधन की समस्या का पुरी तरह से समाधान नहीं कर पायें। इन लोगों ने आज भी लड़के और लड़की के बीच भेदभाव किए हुऐ हैं। इस प्रकार के समाज से आशा नहीं की जा सकती कि विद्यालय में अपने बालकों को भेजने में सक्रिय रूप से योगदान देंगे।

खुली समाज से संपर्क रखने वाले लोगों ने कुछ अंशों तक समावेशी स्कूल को शिक्षा में सफलता मिल सकती है लेकिन पर्याप्त रूप से अभी संभव नहीं है। शहर के सरकारी स्कूलों में तो सरकार सक्रिय रूप से समावेशी शिक्षा को सुनिश्चित करने का आश्वासन दे सकती है लेकिन गैर सरकारी स्कूलों को समावेशी स्कूल में परिवर्तित करना असंभव तो नहीं परन्तु कठिन बहुत है। शहरों में समान्य स्कूलों में परिवर्तित करना व्यवस्थाएँ देकर विरोध करेंगे। उनका यह तर्क है कि हमारे समान्य बालकों को सुचारु रूप से होनेवाली शिक्षण प्रक्रिया में कमी आएगी। इस प्रकार हम देखते हैं तो समावेशी शिक्षा को सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

= ० =

THANK YOU...